7 राज्य • 1 केंद्रशासित प्रदेश • 19 संस्करण : उत्तर प्रदेश | उत्तराखंड | हिमाचल | जम्मू-कश्मीर | दिल्ली | हरियाणा | पंजाब | चंडीगढ़

राजधानी •
वर्ष 15 | अंक 330 | पृष्ठ : 18
मूल्य : तीन रुपये

अमर उजाला

नई दिल्ली
शनिवार, 10 मार्च 2018

दिल्ली से जेवर तक पहुंचेंगे 50 मिनट में

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को लेकर यीडा ने शुरू की सर्वे कंपनी की चयन प्रक्रिया

अमर उजाला ब्यूरो

ग्रेटर नोएडा।

इंदिरा गांधी एयरपोर्ट के आसपास का क्षेत्र हो या फिर दिल्ली के दिल कहे जाने वाले कनॉट प्लेस का एरिया या फिर आईएसबीटी के करीब का इलाका। तीनों जगहों से जेवर में प्रस्तावित नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट तक का सफर अधिकतम 50 मिनट में पूरा होगा। इस समय सीमा में जेवर के एयरपोर्ट तक सफर पूरा कराने को सबसे अच्छा विकल्प क्या होगा, इसका सर्वे जल्द शुरू होने जा रहा है। एयरपोर्ट की नोडल एजेंसी यीडा ने सर्वे करने वाली कंपनी के चयन की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

दरअसल, पीडब्ल्यूसी संस्था की तरफ से अब तक एयर ट्रैफिक का सर्वे कर जो रिपोर्ट सबमिट की गई है, उसमें 41 प्रतिशत यात्री दिल्ली के बताए गए हैं, जो कि आईजीआई तक पहुंचने में ट्रैफिक से जूझते हैं। वे जेवर एयरपोर्ट बनने के बाद आईजीआई नहीं जाएंगे। बाकी यात्री उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान के आसपास के 42 जिलों से हैं। दिल्ली से सबसे अधिक यात्री यहां तब आएंगे जब उनको आईजीआई से कम समय में जेवर एयरपोर्ट तक पहुंचने के लिए सीधा साधन मिलेगा। सर्वे में दिल्ली से जेवर एयरपोर्ट तक पहुंचने के लिए उन विकल्पों के चयन का सुझाव दिया गया है, जिनसे 40-50 मिनट में दिल्ली के यात्री जेवर एयरपोर्ट पहुंच सकें। दिल्ली को जोड़ने के लिए विकल्पों का चयन करने को सर्वे की तैयारी शुरू हो गई है। टर्म ऑफ रेफरेंस (टीओआर) जारी कर दिया है। कंपनियां एक सप्ताह में प्रस्ताव देंगी। उसके बाद किसी कंपनी का चयन किया जाएगा। कंपनी चयन के बाद सर्वे करने में दो से तीन माह का वक्त लग सकता है।

इन रूटों पर होगा सर्वे

जेवर एयरपोर्ट से इंदिरा गांधी एयरपोर्ट दिल्ली तक

ग्रेटर नोएडा के परी चौक से जेवर एयरपोर्ट तक

दिल्ली से मेरठ जा रही हाई स्पीड रैपिड ट्रेन से जोड़ने पर

नोएडा-ग्रेटर नोएडा मेट्रो से नहीं चलेगा काम

दिल्ली से ग्रेटर नोएडा तक परी चौक होते हुए मेट्रो आ रही है। परी चौक से जेवर एयरपोर्ट को मेट्रो से जोड़ा जा सकता है, लेकिन विशेषज्ञों की मानें तो यह मेट्रो बहुत घूमते हुए आ रही है। इसलिए इस मेट्रो से काम नहीं चलेगा।

विशेषज्ञों के मुताबिक इसके लिए दिल्ली से सीधी कनेक्टीविटी (पब्लिक रैपिड ट्रांसपोर्ट फैसिलिटी) देनी होगी। मेट्रो के साथ ही, पॉड टैक्सी, रैपिड रेल, सीधी रोड आदि का विकल्प देना होगा। चयनित एजेंसी इसी का अध्ययन करेगी। लखनऊ में मुख्य सचिव की अध्यक्षता में हुई बैठक में इसी पर मुख्य रूप से चर्चा हुई है।